जी उठना ज़्या घोषित करता है

यीशु की मृत्यु, गाड़ा जाना और जी उठना हमारे विश्वास और परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध का आधार है (1 कुरिन्थियों 15:1-4)। प्रत्येक सप्ताह के पहले दिन प्रभु की मेज़ के पास इकट्ठा होकर[1] हम मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने को मनाते हैं। अभी के लिए, हम अपने विचार इनमें से तीसरी बात अर्थात जी उठने पर लगाएंगे। हम ''जी उठने का क्या महत्व है?'' और ''यह महान घटना क्या घोषित करती है?'' जैसे प्रश्नों का उत्तर देना चाहते हैं। इसके कुछ मूल संदेश ये हैं।

यीशु परमेश्वर का पुत्र है

पहले तो, जी उठना यीशु के परमेश्वर होने की घोषणा करता है। रोमियों 1:4 में पौलुस ने उसके बारे में कहा है, जो ''पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है।'' जी उठना यह साबित करता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है।

पुनरुत्थान की सुबह कब्र पर सबसे पहले जाने वाली में वे स्त्रियां थीं, जो मसीह की देह को सुगन्धित वस्तुएं लगाने का काम पूरा करने के लिए आई थीं। ऐसा लगता है कि मरियम मगदलीनी दूसरी स्त्रियों को छोड़कर पतरस और यूहन्ना के पास चली गई थी। मरियम के भय को सुनकर दोनों प्रेरित पता लगाने के लिए कब्र की ओर भागे थे। यूहन्ना ने बाद में कहा कि उसे कब्र में झांकने के बाद विश्वास हुआ था। पहले, वह इस बात से अनजान कि क्या विश्वास करे, पतरस के साथ बाग में गया था। फिर उसने देखा कि कब्र में क्या था। यूहन्ना का वृत्तांत यह है:

> तब शमौन पतरस उसके पीछे-पीछे पहुंचा और कब्र के भीतर गया और कपड़े पड़े देखे। और वह अंगोछा जो उसके सिर से बन्धा हुआ था, कपड़ों के साथ पड़ा हुआ नहीं परन्तु अलग एक जगह लपेटा हुआ देखा। तब दूसरा चेला [यानी यूहन्ना[2]] भी जो कब्र पर पहिले पहुंचा था, भीतर गया और देखकर[3] विश्वास किया (यूहन्ना 20:6-8)।

यूहन्ना ने क्या देखा, जिससे उसे विश्वास हो गया? उसने ''वह अंगोछा जो उसके सिर से बंधा हुआ था, कपड़ों के साथ पड़ा हुआ नहीं, परन्तु अलग एक जगह लपेटकर

रखा हुआ देखा।'' यदि लोगों ने यीशु की देह पर से जल्दी में उसे उतारा था,[4] तो वे अंगोछा उतारकर सलीके से रखने और कपड़े उतारने में समय न गंवाते। जो कुछ यूहन्ना ने देखा वह मानवीय प्रयास से मेल नहीं खाता था, पर ईश्वरीय हस्तक्षेप से खाता था। यह उस जी उठने के साथ मेल खाता था, जिसकी भविष्यवाणी यीशु ने कई बार की थी (मत्ती 16:21; 17:23; 20:19; मरकुस 8:31; 9:31; 10:34; लूका 9:22; यूहन्ना 2:19)।

यदि आप और मैं समय निकालकर उस प्रमाण को सावधानीपूर्वक देखें, तो हमारे मन में भी वैसे ही विश्वास आ जाएगा, जैसे यूहन्ना को आया था। यह विश्वास दिलाने के कि यीशु मुर्दों में से जी उठा था, कई तर्क हैं। उदाहरण के लिए, सैकड़ों विश्वसनीय गवाहों के लिए गवाही है, जिन्होंने यीशु को जी उठने के बाद जीवित देखा था (1 कुरिन्थियों 15:4-8)।

एक सबूत यीशु के चेलों में आने वाला परिवर्तन है। उसकी गिरफ्तारी और मुकदमे के दौरान मसीह के चेलों के व्यवहार से कोई प्रभावित नहीं हुआ होगा। वे साहसी होने के अलावा बाकी सब कुछ थे। या तो वे अपनी जान बचाने के लिए भाग गए थे या उन्होंने खतरे से दूर रहने की कोशिश की थी। पतरस ने यीशु को जानने से इनकार कर दिया था। परन्तु उसके जी उठने के बाद, वही लोग खुलकर और भी दृढ़ता से यीशु का प्रचार कर रहे थे। उनके विश्वास की बात नये नियम के पन्नों में भरी मिलती है।

उन्हें इस बात का यकीन था? कि यीशु *जीवित* है। इस यकीन ने प्रेरितों के जीवन बदल दिए थे। उनके विश्वास को कैद में डालकर, पत्थर मारकर, पिटाई करके या उन्हें जान से मारकर हिलाया नहीं जा सकता था। निर्बल, चंचल और विश्वास रहित लोग इतने शक्ति से भरे लोग बन गए थे कि जैसे संसार ने इससे पहले कभी नहीं देखे थे। उनकी शिक्षा ने रोमी साम्राज्य को हिलाकर रख दिया कि वह लड़खड़ा कर गिर गया। इन लोगों में आए परिवर्तन को जी उठने से अलग करके नहीं बताया जा सकता। उन्होंने जी उठे प्रभु को देखा था, जिस कारण उनके जीवन सदा-सदा के लिए बदल गए।

जी उठने से बहुत पहले यह साबित हो गया कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, और आज भी यह उसी महान सच्चाई को घोषित करता है।

यीशु का बलिदान स्वीकार कर लिया गया था

जी उठना यह घोषित करता है कि परमेश्वर ने क्रूस पर यीशु का बलिदान ग्रहण कर लिया। मसीहियत का आधार क्रूस है। हमें ''क्रूस ... के द्वारा ... परमेश्वर से'' मिलाया जाता है (इफिसियों 2:16)। यीशु के बलिदान के द्वारा, परमेश्वर के न्याय को संतुष्ट किया गया था,[5] और हमें अनन्त जीवन की आशा मिली। इसलिए पौलुस ने कहा, ''मैं ने यह ठान लिया था, कि ... यीशु मसीह, वरन क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूं'' (1 कुरिन्थियों 2:2)। जब सप्ताह के प्रत्येक पहले दिन हम प्रभु की मेज़ के पास इकट्ठे होते हैं, तो यह ''प्रभु की मृत्यु का प्रचार'' करने के लिए होता है (1 कुरिन्थियों 11:26)।

परन्तु यदि वह मुर्दों में से जी न उठा होता, तो हमें यह पता नहीं चलना था कि क्रूस से क्या उद्देश्य पूरा हुआ है। जी उठना यह घोषित करता है कि परमेश्वर ने वास्तव में हमारे

पापों के लिए यीशु के बलिदान को स्वीकार कर लिया। इस अर्थ में हमें न केवल यीशु की मृत्यु के द्वारा उद्धार ही मिला है, बल्कि उसके जी उठने के द्वारा भी उद्धार मिला है। इसलिए पौलुस ने यीशु के लिए कहा कि ''वह हमारे अपराधों के लिए पकड़वाया गया और हमारे *धर्मी ठहरने* के लिए *जिलाया भी गया*'' (रोमियों 4:25)।

हमारा उद्धार हो सकता है

यीशु के बलिदान को परमेश्वर द्वारा स्वीकार करने का रोमांचकारी परिणाम यह है कि आपका और मेरा उद्धार हो सकता है! जी उठना यह घोषित करता है कि हम पाप में मृत्यु से जीवन के नयेपन में जिलाए जा सकते हैं।

यीशु ने एक बार यह साबित करने के लिए कि उसके पास *आत्मिक* चंगाई देने की सामर्थ है, *शारीरिक* चंगाई का इस्तेमाल किया था (देखें मत्ती 9:6)। इसी प्रकार, बाइबल ज़ोर देती है कि यीशु के *शारीरिक* पुनरुत्थान का सम्बन्ध नये जीवन के लिए हमारे *आत्मिक* पुनरुत्थान से है। रोम के मसीही लोगों के नाम पौलुस ने लिखा:

> सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नये जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय ही उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे। क्योंकि हम जानते हैं, कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ... (रोमियों 6:4-6)।

इफिसियों के नाम लिखते हुए पौलुस ने उनके मन परिवर्तन को इन शब्दों में संक्षिप्त किया: ''जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे तो [परमेश्वर ने] हमें *मसीह के साथ* जिलाया'' (इफिसियों 2:5)। परमेश्वर की आशिषें, ''उसकी शक्ति के प्रभाव के कार्य के अनुसार जो उसने मसीह में किया *कि उसे मरे हुओं में से जिलाकर*'' (1:19ख, 20क)।

हमें जीवित उद्धारकर्ता मिला है

अपने पापों से उद्धार पाने के बाद, हमें मसीही जीवन जीने में सहायता की आवश्यकता है। जी उठना यह घोषित करता है कि हमें एक उद्धारकर्त्ता मिला है, जो हमारे लिए ''विनती करने को सर्वदा जीवित है'' (इब्रानियों 7:25)। हमारी निष्ठा किसी मृत धर्मगुरु में नहीं, बल्कि जीवित व्यक्तित्व में है।

यीशु ने सदा हमारे साथ होने की प्रतिज्ञा की है (मत्ती 28:20)। उसने हमें आश्वासन दिया है कि जब हम इकट्ठे होते हैं, तो वह हमारे बीच होता है (मत्ती 18:20)। इब्रानियों की पुस्तक हमें बताती है कि वह हमारा ''दयालु और विश्वासयोग्य महायाजक'' है, जो ''हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी'' हो सकता है और परीक्षा होने के समय हमारी सहायता के लिए आता है (2:17; 4:15; 2:18)। उसके द्वारा हमें ''दया और अनुग्रह और

आवश्यकता के समय सहायता'' मिलती है (इब्रानियों 4:16)।

यीशु की ''मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ'' ही नहीं हुआ, बल्कि ''उसके जीवन के कारण हमें उद्धार'' भी मिला है (रोमियों 5:10)। ऐसे जीवित और स्नेही उद्धारकर्त्ता के लिए परमेश्वर का धन्यवाद!

एक दिन अलग करके रखा गया है

जी उठना यह भी घोषित करता है कि एक विशेष उद्देश्य के लिए एक विशेष दिन ठहराया गया है, जब मैं ''एक विशेष उद्देश्य के लिए ठहराया गया विशेष दिन'' कहता हूं, तो मेरे कहने का अर्थ किसी विशेष मसीही पर्व को मनाने के लिए एक या दो दिन ठहराए जाने की बात नहीं है (देखें गलातियों 4:10)। न ही मेरे मन में सप्ताह का सातवां दिन (सब्त) है, जो पुराने नियम में ठहराया गया था (निर्गमन 20:8-11; व्यवस्थाविवरण 5:12-15)।

बल्कि, मैं सप्ताह के पहले दिन की बात करता हूं, वह दिन जिसे हम ''रविवार'' कहते हैं। सप्ताह के पहले दिन, आरम्भिक कलीसिया आराधना के लिए अर्थात प्रभु भोज में भाग लेने (प्रेरितों 20:7) और अपनी आमदनी में से देने (1 कुरिन्थियों 16:2) के लिए इकट्ठी होती थी। प्रेरित यूहन्ना इस पहले दिन को ''प्रभु का दिन'' कहता है (प्रकाशितवाक्य 1:10)।

मसीही लोगों के लिए सप्ताह का पहला दिन विशेष क्यों था (और है)? क्योंकि सप्ताह के पहले दिन प्रभु *जी उठा* था।[6] मरकुस हमें बताता है कि ''*सप्ताह के पहले दिन बड़े भोर,* जब सूरज निकला ही था, [स्त्रियां] कब्र पर आईं'' (मरकुस 16:2)। वहां एक स्वर्गदूत ने उन्हें बताया, ''तुम यीशु नासरी को, जो क्रूस पर चढ़ाया गया था, ढूंढ़ती हो। वह जी उठा है, वह यहां नहीं है; देखो यही वह स्थान है, जहां उन्होंने उसे रखा था'' (मरकुस 16:6)। मसीही लोगों के लिए *प्रत्येक* पहले दिन की भोर ''जी उठने की सुबह'' है।

हम भी, जिलाए जाएंगे

हम जी उठने के सबसे अधिक रोमांचकारी संदेशों में से एक पर आते हैं: यह घोषित करता है कि एक दिन हमारी देहें भी मुर्दों में से जिलाई जाएंगी! बहुत पहले, अय्यूब ने पूछा था, ''यदि मनुष्य मर जाए तो क्या वह फिर जीवित होगा?'' (अय्यूब 14:14)। परमेश्वर का उत्तर है, ''हां, क्योंकि यीशु को जिलाया गया था!'' 1 कुरिन्थियों 15:20-26 में इस सच्चाई की पुष्टि की गई है.

यदि हम ने ''अच्छे काम'' किए हैं, तो हम ''जीवन के पुनरुत्थान के लिए'' आएंगे! यदि हमने ''बुरे काम'' किए हैं तो हम ''दण्ड के पुनरुत्थान के लिए'' आएंगे (यूहन्ना 5:29), परन्तु जी उठना *सभी का* होगा। मृत्यु कोई दीवार नहीं, बल्कि एक द्वार है। जी उठना हमें आश्वस्त करता है कि ऐसा ही होगा!

परमेश्वर अपने वचन को पूरा करता है

एक और संदेश पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है, एक सामान्य सच्चाई, जो सब लोगों

के लिए जाननी आवश्यक है कि जी उठना यह घोषित करता है कि परमेश्वर अपने वचन को पूरा करता है। एक प्रचारक कहा करता था, ''परमेश्वर जो कहता है वह करता भी है!''

अपने जी उठने के बारे में की गई यीशु की घोषणाओं से उसके सुनने वालों पर एक प्रभाव पड़ा, विशेषकर मन्दिर के सम्बन्ध में उसकी गूढ़ अर्थ वाली बातों से: ''यीशु ने उनका उत्तर दिया, कि इस मन्दिर को ढहा दो, और मैं उसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा''; ''परन्तु उसने अपनी देह के मन्दिर के विषय में कहा था'' (यूहन्ना 2:19, 21)। पिलातुस के सामने मुकदमे के समय, एक झूठे गवाह ने यही भविष्यवाणी दोहराई (मत्ती 26:61)। जब यीशु क्रूस पर था, तो अपमान करने वालों ने पुकारकर कहा था, ''हे मन्दिर के ढहाने वाले और तीन दिन में बनाने वाले, अपने आप को तो बचा'' (मत्ती 27:40क)।[7]

यीशु के शत्रुओं ने उसकी भविष्यवाणी पर विश्वास नहीं किया; तौ भी, यह पूरी हुई। उसकी देह अर्थात उसका सांसारिक मन्दिर क्रूस पर ढह गया, और तीसरे दिन, उस देह को, मुर्दों में से जिलाया गया। जब प्रभु कोई बात कहता है, तो उसका अर्थ होता है। आप इस पर विश्वास कर सकते हैं!

सारांश

कुछ लोग *कहते हैं* कि उनका विश्वास जी उठने पर है, परन्तु इस पर साल में एक ही बार ज़ोर देते हैं। इसके साथ ही, वे जी उठने के द्वारा घोषित महान सच्चाइयों का इनकार करते हैं:

- जी उठना यह घोषित करता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, परन्तु बहुत से लोग उसके ईश्वरीय होने का इनकार करते हैं।
- जी उठना घोषित करता है कि यीशु ने परमेश्वर के क्रोध को शांत किया-परन्तु बहुत से लोग पाप की वास्तविकता से और इस तथ्य से इनकार करते हैं कि परमेश्वर के लिए पापियों को दण्ड देना आवश्यक है।
- जी उठना यह घोषित करता है कि जब हमारा विश्वास हमें यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने में बपतिस्मे तक ले आता है, तो हमारा उद्धार हो सकता है (गलातियों 3:26, 27)-परन्तु कुछ लोग बपतिस्मे की आवश्यकता से इनकार करते हैं, जबकि दूसरे लोग बपतिस्मे में यीशु को पहनने से इनकार करते हैं।
- जी उठना घोषित करता है कि हमें एक जीवित उद्धारकर्त्ता मिला है, जो हमारे लिए विनती करता है-परन्तु बहुत से लोग इस विचार का मज़ाक उड़ाते हैं कि परमेश्वर जीवन के लिए व्यक्तिगत सामर्थ उपलब्ध करवाता है।
- जी उठना घोषित करता है कि आराधना के लिए एक विशेष दिन ठहराया गया है, प्रत्येक सप्ताह का पहला दिन, परन्तु बहुत से लोग वर्ष में कुछ दिन उपस्थित होकर इसे सीमित कर देते हैं।
- जी उठना घोषित करता है कि एक दिन हम जिलाए जाएंगे, परन्तु बहुत से लोग शारीरिक पुनरुत्थान से इनकार करते हैं।
- जी उठना घोषित करता है कि परमेश्वर अपने वचन का समर्थन करता है-परन्तु

बहुत से लोग उस वचन की शिक्षा पर हंसते हैं।

बहुत साल पहले, ब्रिटेन में सबसे बड़े कैथेड्रल, योक मिनिस्टर के 760 साल पुराने विंग में विनाशकारी आग लगने पर पूरा इंग्लैंड दुखी था। इस प्राचीन कैथेड्रल को प्रत्येक वर्ष हज़ारों पर्यटक देखने आते हैं। आग तो भयंकर थी ही, इससे भी भयंकर उससे कुछ दिन पहले घटी घटना थी: उस भवन में, ''द रैवरेंड डेविड जैंकिंस'' को उसके सार्वजनिक वक्तव्य के बावजूद कि वह यीशु के कुंआरी से जन्म में विश्वास नहीं रखता और यह विश्वास नहीं करता कि यीशु सचमुच मुर्दों में से जी उठा था, ''बिशप ऑफ़ डर्हम'' नियुक्त किया गया![8]

क्या *आप* जी उठने में विश्वास करते हैं? यदि हां, तो फिर और लोगों को भी बताएं! फिर ऐसे ही जीवन बिताएं!

यदि आप जी उठने में विश्वास करते हैं, और आपने अभी बपतिस्मा नहीं लिया है तो आपको बपतिस्मा लेने में देर नहीं करनी चाहिए।[9] जिस प्रकार परमेश्वर की सामर्थ ने नीचे आकर अपने पुत्र की बेजान देह में जीवन डालकर उसे मुर्दों में से जिला दिया, वैसे ही परमेश्वर की सामर्थ और प्रेम आपको नया जीवन दे देगा। यदि आप उसकी इच्छा के सामने समर्पण करने को तैयार हैं।

टिप्पणियां

[1]प्रभु भोज की स्थापना करते हुए यीशु ने ज़ोर दिया कि यह उसकी मृत्यु का प्रचार है (1 कुरिन्थियों 11:23-26); परन्तु भोज और जी उठने में भी गहरा सम्बन्ध है। क्योंकि यीशु सप्ताह के पहले दिन जी उठा (मत्ती 28:1-6), कलीसिया पहले दिन इकट्ठी होती थी-विशेषकर प्रभु भोज लेने के लिए (प्रेरितों 20:7; 1 कुरिन्थियों 16:1, 2 भी देखें)। [2]पतरस के साथ दूसरा चेला ''जिससे यीशु प्रेम रखता था'' (यूहन्ना 20:2) माना जाता है, जिसे अधिकतर लोग यूहन्ना द्वारा अपने आप को कहने का ढंग मानते हैं (यूहन्ना 13:23 भी देखें; 19:26; 21:7, 20)। [3]यूनानी शब्द के अनुवाद ''देखकर'' का संकेत निरीक्षण से बढ़कर है; यह *समझ* का संकेत देता है। [4]कुछ लोगों ने यह दावा किया है। यूहन्ना 20:2 और मत्ती 28:11-15 पढ़ें। [5]पवित्र शास्त्र द्वारा इसका संकेत देते ''प्रायश्चित'' शब्द का इस्तेमाल कइयों को पता नहीं है (1 यूहन्ना 2:2; 4:10)। इस शब्द की संक्षिप्त व्याख्या के लिए इसी पुस्तक में ''यीशु को क्रूस पर मरना क्यों पड़ा था?'' लेख देखें। [6]सब्त और पहला दिन दोनों को अंग्रेज़ी अक्षर ''res'' से आरम्भ होने वाली घटनाओं से पवित्र माना जाता था: सब्त को सातवें दिन परमेश्वर के विश्राम (*res*ting) से पवित्र माना जाता था। सप्ताह का पहला दिन यीशु के जी उठने (*res*urrection) से पवित्र माना जाता था। [7]प्रेरितों 6:14 में महासभा की बात भी देखें। [8]यह उदाहरण अमारिलो, टैक्सस, 13 अप्रैल 1986 के सैंट्रल चर्च ऑफ़ क्राइस्ट के चर्च बुलेटिन डिक मारसियर, ''इट'स टाइम टू टेक ए स्टैंड,'' *हिलटॉप रिफलैक्शन्स,* से लिया गया। [9]बपतिस्मे के महत्व पर पहले उद्धृत किया गया। यदि कोई प्रभु से दूर चला गया है तो उसे वापस लाने की आवश्यकता पर भी ज़ोर दें (याकूब 5:16; प्रेरितों 8:22)।